नारद जी की तरह निष्पक्ष हों पत्रकार 06
देश प्रेम की प्रतिमूर्ति डॉक्टर जी 09
विवादों में अढ़ाई दिन का झोंपड़ा 12

राष्ट्रीय विचारों का पाक्षिक

₹10

पाथेय कण

ज्येष्ठ कृ.10, वि. 2081, युगाब्द 5126, 1 जून, 2024

39 वर्षों से निरंतर

नीमूचाणा जन आंदोलन की शताब्दी

नीमूचाणा नरसंहार

patheykan@gmail.com @patheykanofficial @patheykanofficial @patheyofficial1 @patheykan

www.patheykan.com

चित्रदीर्घा

बाड़मेर

अपने मोहल्ले के हर घर में समय पर हमारा विचार पहुँचाती बाड़मेर की 7 वर्षीय तृप्ति बिटिया

अजमेर

'सैल्फी विद पाथेय' पत्रिका के साथ अजमेर के सुधि पाठकगण

जयपुर

सामाजिक समरसता

जयपुर में आयोजित श्रीराम जानकी सर्वजातीय सामूहिक विवाह सम्मेलन में 13 जातियों के 45 वरों की एक साथ निकलती बारात। (16 मई)

बिलाड़ा

चतुष्खंड शाखा संगम 2024 बिलाड़ा जिला (जोधपुर प्रांत) में 101 शाखाओं के 1050 स्वयंसेवकों ने भाग लिया। (5मई)

नागौर

आचार्य महाप्रज्ञ जी की जन्मस्थली टमकौर (नागौर) में बनी प्याऊ का नाम पाक्षिक पत्रिका के नाम पर 'पाथेय कण प्याऊ' रखा गया है...।

चित्तौड़ प्रांत

भीलवाड़ा में राष्ट्र सेविका समिति के पन्द्रह दिवसीय (प्रवेश) वर्ग के शुभारंभ अवसर पर हवन करती समिति की बहिनें।

पाथेय कण पोर्टल पर पढ़ें

(दिए गए लिंक पर क्लिक करें)

■ त्रिशताब्दी समिति लोकमाता के संदेश को पहुंचाएगी जन-जन तक
https://patheykan.com/?p=26728

सूचना

औपनिवेशिक कानूनों का अंत की अंतिम किश्त अपरिहार्य कारणों से इस बार नहीं दी जा रही है। इसे आगामी अंक में प्रकाशित किया जाएगा।

पाथेय कण

ज्येष्ठ कृ.10 से शु.9 तक
विक्रम संवत 2081
युगाब्द 5126
01-15 जून, 2024
वर्ष : 40 अंक : 5

सम्पादक : रामस्वरूप अग्रवाल
सह सम्पादक : मनोज गर्ग
सम्पादन सहयोगी : हेमलता चतुर्वेदी
प्रबंध सम्पादक : ओमप्रकाश
सह प्रबंध सम्पादक : श्याम सिंह
अक्षर संयोजन : कौशल रावत

प्रबंधकीय कार्यालय

'पाथेय भवन' 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राजस्थान)
E-mail : patheykan@gmail.com

पाथेय कण संस्थान के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक: माणकचन्द

सहयोग राशि

एक वर्ष 150/-
पन्द्रह वर्ष 1500/-

पाथेय कण प्राप्त नहीं होने पर प्रात: 10 से सायं 5 बजे तक संपर्क करें- 79765 82011 इसके अतिरिक्त समय में वाट्सएप व मैसज करें अथवा ईमेल पर जानकारी दें। अति आवश्यक होने पर मो.न. 9166983789 पर मोहित जी से संपर्क कर सकते हैं।

संपादकीय

भारत और विश्व में तेजी से बढ़ती मुस्लिम जनसंख्या

पिछले दिनों प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद् की एक अध्ययन रिपोर्ट मीडिया में आई थी जिसके अनुसार वर्ष 1950 और 2015 के बीच देश में हिंदुओं की जनसंख्या 7. 8 प्रतिशत घट गई है, वहीं भारत में मुस्लिमों की आबादी में 43.15 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। 1950 में भारत की कुल जनसंख्या में मुसलमानों का प्रतिशत 9.84 था जो 2015 में बढ़कर 14.09 हो गया है। हिंदुओं की जनसंख्या में हिस्सेदारी 85 प्रतिशत से घटकर 78 प्रतिशत हो गई। क्या यह चिंताजनक नहीं है?

जानकारों का कहना है कि भारत में मुस्लिम जनसंख्या वृद्धि का कारण पड़ोसी देशों से हो रही घुसपैठ के साथ ही लव जिहाद, मतांतरण और मुस्लिम महिलाओं की ज्यादा प्रजनन दर भी है। 2019-20 के मध्य किए गए राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वे (एनएफएचएस)-5 के अनुसार हिंदू महिलाओं की प्रजनन दर जहां 1.9 है वहीं मुस्लिम महिलाओं की 2.3 है। यानी, 10 हिंदू महिलाएं अपने जीवन काल में औसतन 19 बच्चों को जन्म देती हैं वहीं 10 मुस्लिम महिलाएं 23 बच्चों को।

उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, गुजरात, हरियाणा, हिमाचल, झारखंड व उत्तराखंड राज्यों में लव जिहाद पर रोक लगाने के कानून बने हैं। ऐसे कानून सभी राज्यों में बनने चाहिए और उनका सख्ती से पालन आवश्यक है।

यह भी ध्यान देने योग्य तथ्य है कि मिजोरम, नागालैंड, मेघालय, अरुणाचल, मणिपुर जैसे राज्य जो 1940 के दशक में हिंदू बहुल थे, आज वहाँ हिंदू अल्पसंख्यक हो गए हैं। इसके राजनीतिक और सामाजिक निहितार्थ होने ही वाले हैं। इससे राष्ट्रीय सुरक्षा, आंतरिक सुरक्षा और सामाजिक सौहार्द्र भी प्रभावित होगा। इन सब बातों पर आत्म चिंतन और चर्चा करने की आवश्यकता है। स्वाभाविक ही है कि, सरकार जनसंख्या नियंत्रण नीति बनाए- इसकी मांग उठने लगी है। संपूर्ण देश में सख्त मतांतरण विरोधी कानून की मांग भी उठ रही है।

पड़ोसी देशों की स्थिति

पड़ोसी देशों की धार्मिक जनसांख्यिकी में बदलाव भी विचारणीय है। पड़ोसी देश नेपाल और म्यांमार जहां बहुसंख्यक हिंदू या बौद्ध हैं उनकी आबादी में कमी आई है, परंतु बांग्लादेश, पाकिस्तान व अफगानिस्तान जहां बहुसंख्यक मुसलमान हैं, वहां उनकी आबादी में बढ़ोत्तरी हुई। वहां हिंदू, बौद्ध आदि अल्पसंख्यकों के प्रतिशत में अत्यधिक कमी आई है। यह किस विशेष तथ्य की ओर इशारा कर रहा है? बांग्लादेश से लाखों की संख्या में मुस्लिमों के अवैध रूप से भारत आने के बावजूद वहां की मुस्लिम आबादी में 18.5 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है।

वैश्विक परिदृश्य

विश्व में यद्यपि वर्तमान में ईसाई रिलिजन को मानने वालों की संख्या सर्वाधिक है, परंतु, इस्लाम सबसे ज्यादा तेजी से बढ़ने वाला रिलिजन है। अमेरिका की संस्था 'प्यू रिसर्च सेंटर' की एक रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2010 में विश्व की आबादी में ईसाइयों की हिस्सेदारी 31.4 प्रतिशत थी जो 2050 में भी इतनी ही रहने वाली है। परंतु, जो मुस्लिम आबादी 2010 में विश्व की 23.2 प्रतिशत थी, वह बढ़कर 2050 तक लगभग 30 प्रतिशत (29.7 प्रतिशत) होने की संभावना है, यानी 73 प्रतिशत की भारी वृद्धि। 2010 में विश्व में 15 प्रतिशत हिंदू तथा 7.1 प्रतिशत बौद्ध थे जो 2050 में घटकर क्रमशः 14.9 प्रतिशत एवं 5.2 प्रतिशत रहने का अनुमान है।

प्यू रिसर्च सेंटर का अनुमान है जो मुस्लिम आबादी 2010 में विश्व में एक चौथाई थी और ईसाइयों के बाद दूसरे क्रमांक पर थी वह 2070 तक विश्व में सबसे ज्यादा होगी और यह ईसाइयों को पीछे छोड़ देगी।

सन 2010 में विश्व में सबसे ज्यादा मुस्लिम आबादी वाले देश क्रमशः इंडोनेशिया, पाकिस्तान तथा भारत थे। प्यू रिसर्च सेंटर का अनुमान है कि यदि भारत में मुस्लिम आबादी बढ़ने की यही रफ्तार रही तो 2050 तक पाकिस्तान और इंडोनेशिया को पीछे छोड़ते हुए भारत विश्व में सबसे ज्यादा मुस्लिम आबादी वाला देश होगा।

संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत की चिंता समझ में आती है जब वे कहते हैं कि धर्म आधारित जनसंख्या के असंतुलन की अनदेखी नहीं की जानी चाहिए। जनसंख्या में असंतुलन से भौगोलिक सीमा में बदलाव होता है। उनका कहना है कि जनसंख्या के असंतुलन के कारण भारत ने गंभीर परिणाम भुगता है। 1947 में हुआ भारत का विभाजन और पाकिस्तान बनने के पीछे धार्मिक जनसंख्या असंतुलन जिम्मेदार था।

विश्व में बढ़ती मुस्लिम जनसंख्या से अनेक देशों के नेताओं ने भी पिछले दिनों अपनी चिंता प्रकट की है।

-रामस्वरूप

नीमूचाणा जन आंदोलन की शताब्दी

नीमूचाणा नरसंहार

• *पाथेय डेस्क*

आज से 100 वर्ष पूर्व राजस्थान के अलवर जिले में स्थित नीमूचाणा गांव में भी एक जलियांवाला बाग जैसा नरसंहार हुआ था। 14 मई, 1925 के दिन इस गांव में किसान व उनके समर्थन में सर्व समाज के लोग अपनी मांगों को लेकर इकट्ठे हुए थे।

अंग्रेजों की शह से लगान में की गई अत्यधिक वृद्धि को वापस लिए जाने तथा जंगली सुअरों से फसलों की रक्षा संबंधी मांगों को लेकर लोग एकजुट हुए थे। बताते हैं कि रियासत की फौज ने गांव को चारों तरफ से घेर लिया था। इस फौज को ईस्ट इण्डिया कम्पनी की सहायता से 4 मशीनगन (नौराणा, महाराष्ट्र से) उपलब्ध कराई गई थी। इन मशीनगनों को सभा स्थल के चारों ओर के टीलों (बालू रेत के ढेरों) पर स्थापित कर दिया गया। बंदूकों व तोपों से लैस घुड़सवार सैनिकों द्वारा संपूर्ण गांव को घेरा हुआ था। सरकारी रिकॉर्ड के अनुसार फौज में 4 मशीनगन, 2 तोप, 200 पैदल सैनिक तथा 100 घुड़सवार सैनिक थे इनका नेतृत्व जनरल छाजू सिंह कर रहा था जो अलवर के मुस्लिम प्राइम मिनिस्टर और अंग्रेज राजनीतिक एजेन्ट का पिट्ठू था।

सभा शांतिपूर्वक चल रही थी। सभा में किसानों के साथ-साथ सभी वर्गों एवं जातियों की महिलाएं-पुरुष, बच्चे, बुजुर्ग शामिल थे। जनरल छाजू सिंह ने बिना सैशन जज की अनुमति के ही, बिना सूचना दिए तथा सभा को अवैध घोषित कराने की मुनादी कराए बिना ही तुरत-फुरत में आंदोलनकारियों पर गोली दागने का आदेश दिया। मई की भीषण गर्मी और रेतीले टीलों से व्याकुल ग्रामीण गोलियों की बौछार से बचने के लिए घरों की ओर भागे तो सेना ने घरों में आग लगा दी। आग से बचने के लिए ग्रामीण और क्रांतिकारी नालों की ओर भाग रहे थे तथा अंधाधुंध फायरिंग की चपेट में आते जा रहे थे। तोप से निकले गोलों और आग लगने से चारों ओर धुआँ फैल चुका था। भागते हुए लोगों पर भी गोलियां बरसती रहीं। इस घटना के बारे में इतिहासकार भगवानदास केला ने लिखा है कि, ''दो घण्टे तक फायरिंग चलती रही जिसमें मशीनगन 42 मिनट काम में ली गई। सेना ने औरतों, बच्चों और जानवरों को भी नहीं छोड़ा।''

इस बर्बरतापूर्ण कृत्य में सैकड़ों, पुरुष, महिलाएं घटनास्थल पर ही बलिदान हो गए। सैकड़ों घायल हो गए, सैकड़ों पशु मारे गए। कई लापता हो गए। स्वतंत्रता सेनानी शोभालाल गुप्ता के अनुसार 353 झोपड़ियां जल गई। लाखों रुपये का नुकसान हुआ, ठाकुर कुशाल सिंह, संतलपुर के भूरजी, विशालू के ठाकुर सुरजन सिंह, नीमूचाणा की सीता देवी, राधा देवी, कन्हैया नाई, जमना बनिया इत्यादि सहित सैकड़ों क्रांतिकारी महिला-पुरुष-बच्चों ने बलिदान दिया।

किसानों से शुरू हुए इस आंदोलन में सभी आयु वर्ग एवं जातियों के जन-सामान्य ने बढ़-चढ़कर भाग लिया था इसलिए बलिदानियों में सभी जन-सामान्य की सूची बहुत बड़ी है। इस घटना के तुरन्त बाद तीन दर्जन से अधिक क्रांतिकारियों को गिरफ्तार कर सेना ले गई। उनके साथ जेल में दुर्व्यवहार किया गया एवं प्रताड़ना दी गई।

नीमूचाणा नरसंहार अत्यन्त हृदय विदारक घटना थी जिसकी महात्मा गांधी ने निंदा की और जलियांवाला बाग से भी अधिक जघन्य अपराध बताया था।

नीमूचाणा आंदोलन वस्तुतः अंग्रेजों की गलत नीतियों के विरुद्ध था। इसमें किसानों को समाज के सभी वर्गों का सहयोग मिला। उस समय के राष्ट्रीय समाचार पत्रों यथा प्रताप, तरुण राजस्थान, रियासत, यंग इण्डिया आदि ने क्रांतिकारियों-आंदोलनकारियों का पक्ष लिया। अंततः लगान में बढ़ोतरी वापस ले ली गई।

अलवर के महाराजा जयसिंह

जिस समय नीमूचाणा गांव में अलवर रियासत की फौज द्वारा नरसंहार किया गया, अलवर में महाराजा जयसिंह का राज था। बताया जाता है कि वे कुशल प्रशासक, न्यायप्रिय और देशभक्त

थे। उन्होंने हिंदी को उर्दू के स्थान पर राज्य भाषा बनाया। ग्राम पंचायतों की स्थापना की, न्यायपालिका को कार्यपालिका से पृथक कर राज्य में उच्च न्यायालय की स्थापना की। 117 बांधों का निर्माण कराया। आज के राजर्षि कॉलेज तथा सरिस्का वैली के निर्माण का श्रेय भी महाराजा जयसिंह को जाता है। उन्होंने मतांतरण पर प्रतिबंध लगाने के लिए कन्वर्जन एक्ट बनाया। बाल विवाह, बेमेल विवाह, मृत्यु भोज पर भी पाबंदी लगाई गई थी। स्वामी विवेकानन्द के अंग्रेजी-बांग्ला भाषा वाले साहित्य को हिंदी में प्रकाशित कराने के लिए आर्थिक सहयोग दिया। ऐसे महाराज जयसिंह के राज्य में नीमूचाणा जैसा नरसंहार कैसे हो गया? बताते हैं कि महाराजा का मुस्लिम प्रधानमंत्री व कुछ अन्य अधिकारी राजा को पसंद नहीं करते थे। अंग्रेज एजेन्ट भी राजा की लोकप्रियता से चिढ़ा बैठा था। आंदोलनरत किसानों को राजा से मिलने नहीं दिया गया। जब महाराजा जयसिंह माउंट-आबू में छुट्टियां मनाने गए हुए थे, पीछे से अंग्रेजों के षड्यंत्र के अंतर्गत जनरल छाजू सिंह ने निहत्थे लोगों को गोलियों से भून डाला था।

नीमूचाणा नरसंहार का समाचार जैसे ही माउंट-आबू में महाराजा को मिला, वे अपना दौरा रद्द करके तुरंत नीमूचाणा की ओर निकल पड़े तथा तीसरे दिन ही नीमूचाणा पहुँच गए थे। बताते हैं कि गांव का दृश्य देखकर महाराजा की आंखों से आंसू आ गए थे। महाराजा ने प्रजा के मध्य पहुंच कर क्षमा प्रार्थना की और राहत की पेशकश की जिसे यद्यपि स्वाभिमानी आंदोलनकारियों ने मना कर दिया। महाराजा ने गिरफ्तार किए गए लोगों से मुलाकात की और उन्हें रिहा करवा दिया। ठा. श्योनाथ सिंह, ठा. रामनाथ सिंह आलमपुर आदि के पत्रों से स्पष्ट होता है कि महाराजा किसानों की मांगों से तथा फौज भेजने की घटना से अनभिज्ञ थे। यह सब अंग्रेज अधिकारियों, बाहरी एजेंसियों एवं प्रधानमंत्री का षड्यंत्र था जिससे महाराजा को बदनाम करके अलवर रियासत की शासन व्यवस्था ब्रिटिश सरकार के हाथों में आ जाए। हुआ भी यही, महाराजा पर कई आरोप लगाकर 1933 में उन्हें राज्य से निष्कासित कर दिया गया। ■

शताब्दी वर्ष समारोह

नीमूचाणा जन आंदोलन तथा नरसंहार के शताब्दी वर्ष की शुरुआत पर गत 14 मई, 2024 को एक कार्यक्रम में नरसंहार में बलिदान हुए लोगों को श्रद्धांजलि दी गई। नीमूचाणा नरसंहार की प्रत्यक्षदर्शी 111 वर्षीय नानुड़ी देवी को मंच पर बैठाकर पुष्पमाला से स्वागत किया गया।

नीमूचाणा गांव में आयोजित इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि संघ के राजस्थान क्षेत्र प्रचारक श्री निम्बाराम ने संबोधित करते हुए कहा कि भारत का इतिहास संघर्ष और बलिदान का इतिहास रहा है। वामपंथी इतिहासकारों ने भारत के गौरवशाली इतिहास को तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत किया है। सच तो यही है कि भारत के वीर योद्धाओं के संघर्ष और क्रांतिकारियों के कारण ही भारत से मुगल एवं अंग्रेज शासन का अंत हुआ। आज देश में 'स्व' के 'तंत्र' को पूरी तरह लागू करने की आवश्यकता है।

मुख्य अतिथि ने नीमूचाणा निवासियों का आह्वान किया कि गांव में समरसता का वातावरण बनाएं ताकि छोटे-बड़े का भेद मिटाकर एक दूसरे का सम्मान करें तथा सदैव एकजुट रहें।

इस अवसर पर मानगढ़ धाम नरसंहार (17 नवम्बर, 1913, बांसवाड़ा) तथा लिलूड़ी-बड़ली नरसंहार (6 मई, 1922, भूला वालोदिया गांव, पिण्डवाड़ा, सिरोही) में अंग्रेजों द्वारा किए गए नरसंहार में बलिदान हो गए सैकड़ों जनजाति-वनबंधुओं का भी स्मरण किया गया।

अ.भा.इतिहास संकलन योजना, राजस्थान क्षेत्र के क्षेत्रीय संगठन सह सचिव डॉ.राकेश शर्मा ने कहा कि नीमूचाणा नरसंहार से अंग्रेजी शासन का क्रूर चरित्र उजागर हुआ है।

कार्यक्रम नीमूचाणा धरोहर संरक्षण समिति एवं इतिहास संकलन समिति, जयपुर प्रांत के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया गया था। राजस्थान सरकार से नीमूचाणा गांव को राष्ट्रीय स्मारक का दर्जा दिए जाने की मांग की गई। समिति के प्रांत संगठन मंत्री डॉ.धर्मपाल यादव, से.नि.जिला शिक्षाधिकारी भैरूराम गुर्जर व डॉ.कैलाश गुर्जर ने भी सभा को संबोधित किया। इतिहास संकलन समिति, जयपुर प्रांत के महामंत्री, डॉ.जयंतीलाल खंडेलवाल ने कार्यक्रम का संचालन किया।

पत्रकार को नारद जी की तरह निष्पक्ष होना चाहिए : निम्बाराम

नारद जी ने संचार क्रांति का उद्भव किया : मेघवाल

देवर्षि नारद जयंती के अवसर पर वीएसके फाउंडेशन की ओर से गत 25 मई को मालवीय नगर, जयपुर स्थित पाथेय भवन के नारद सभागार में पत्रकार सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के क्षेत्र प्रचारक निम्बाराम जी ने कहा कि पत्रकार को निष्पक्ष होना चाहिए देवर्षि नारद की तरह। यह मानव पर निर्भर है कि वह नारायण भी बन सकता है। ऋषि साधना के बल पर प्राप्त व्यवहार व आचरण हम दूसरों को देते हैं। पत्रकारों का पत्रकारों के लिए एक मंच बने, वीएसके इसमें सफल होता दिखाई दे रहा है। नारद जयंती पर पत्रकारों के सम्मान कार्यक्रम अन्य जिलों में भी हुए।

आपातकाल में मीडिया की स्वतन्त्रता खत्म कर दी गई थी। आज मीडिया बँटा हुआ दिखता है। मीडिया लोक कल्याण के लिए होता है। इसका उदाहरण नारद जी के आचरण से मिलता है। जब नारद जी को पता चला कि असुर अमृत चुरा लेंगे तो उन्होंने देवताओं को इसकी सूचना दी,तभी हम असुरों से अमृत बचा सके। इसलिए लोक कल्याण के लिए कार्य करने वाला पत्रकार नारद समान है। खबर के संभावित परिणाम पर विचार करते हुए सावधानी बरतनी चाहिए। आज का पत्रकार बेरोजगार हो ही नहीं सकता। सबसे बड़ा अहित सोशल मीडिया ने किया है। ऐसा विश्वसनीय मीडिया बने कि खबर की पुष्टि के लिए आपका सन्दर्भ दिया जाए। विनम्रता से समाज में सम्मान मिलता है। प्रत्येक व्यक्ति के अपने मानवाधिकार हैं। समाज में सकारात्मकता बढ़ती है तो हम सब आगे बढ़ते हैं। जो भारत माता के भक्त हैं। देश के विकास और समृद्धि के लिए कार्य करने वाला प्रत्येक व्यक्ति राष्ट्रीय है। पाठक की भूमिका प्रमुख है। विडम्बना यह है कि 75 वर्ष बाद भी हम स्वतंत्रता को तरस रहे हैं। भारत की अपनी परंपरा रही है। अंग्रेज व्यापार करने आया क्योंकि भारत सोने की चिड़िया था। हमें नचिकेता व ध्रुव, प्रहलाद जैसे पूर्वजों पर अभिमान करना सीखना होगा।

प्रारंभ में भाव सुरताल ग्रुप की ओर से नारद जी की स्तुति में नृत्य नाटिका प्रस्तुत की गई। इसमें पर्यावरण व जल संरक्षण का महत्व बताया गया।

मुख्य अतिथि जर्नलिस्ट एसोसिएशन ऑफ राजस्थान के प्रदेशाध्यक्ष हरिवल्लभ जी मेघवाल ने कहा कि देवर्षि नारद ने संचार क्रांति का उद्भव किया। महर्षि नारद के पास दिव्य दृष्टि थी। लोक कल्याण हेतु विश्व में भ्रमण करते थे। समरसता और समाज में सामंजस्य स्थापित करने में इनका विशेष योगदान है।

कार्यक्रम में प्रिंट मीडिया से फर्स्ट इंडिया के वरिष्ठ पत्रकार पंकज सोनी को राम मंदिर पर उनकी सीरीज के लिए,न्यू मीडिया से नवतेज टीवी के उमंग माथुर को मुहाना मंडी में अतिक्रमण पर कवरेज

नागौर व बीकानेर में आयोजित कार्यक्रम को पाथेय कण के सह प्रबंध संपादक श्याम सिंह जी ने सम्बोधित किया।

भीलवाड़ा : भीलवाड़ा राजस्थान पत्रिका के श्री तेज नारायण शर्मा, बारां दैनिक भास्कर के श्री संजय चौरसिया, प्रतापगढ़ के श्री संजय जैन ,अजमेर के फोटोजर्नलिस्ट श्री दीपक शर्मा, कोटा राजस्थान पत्रिका के श्री नीरज गौतम एवं श्री शैलेंद्र तिवारी को सम्मानित किया गया।

हनुमानगढ़ : *19 मई को पत्रकारिता जगत में उत्कृष्ट कार्य करने वाले 22 पत्रकारों को सम्मानित किया गया।*

अजमेर : चित्तौड़ प्रांत के अजमेर चेप्टर में आयोजित समारोह को शिक्षाविद् हनुमान सिंह राठौड़ ने सम्बोधित किया।

के लिए सम्मानित किया गया। साथ ही आंचलिक पत्रकारिता में अलवर दैनिक भास्कर के राधेश्याम तिवारी व राजकुमार जैन को संयुक्त पुरस्कार से सम्मानित किया गया। अभिषेक अग्रवाल डायरेक्टर वीएसके ने धन्यवाद ज्ञापित किया। पाथेय कण को प्राप्त जानकारी के अनुसार विश्व संवाद केन्द्र द्वारा भीलवाड़ा, नागौर, अजमेर, श्रीगंगानगर, बीकानेर में भी नारद जयंती आयोजन व पत्रकारों को सम्मानित करने के कार्यक्रम हुए।

श्रीगंगानगर में आयोजित कार्यक्रम।

मुसलमानों को ओबीसी श्रेणी में दिए गए आरक्षण को न्यायालय ने किया रद्द

प.बंगाल की ममता बनर्जी सरकार द्वारा 2010 एवं 2012 में मुसलमानों की लगभग सभी जातियों को अन्य पिछड़ा वर्ग में शामिल करते हुए दिए गए आरक्षण को कलकत्ता उच्च न्यायालय ने रद्द कर दिया है। ममता बनर्जी ने 2011 में सत्ता में आते ही ओबीसी में नई 42 जातियों को जोड़ा था, इनमें से 41 जातियां मुस्लिम थी। 2012 में 35 जोड़ी गई जातियों में से 30 मुस्लिम तथा मात्र 5 हिंदू जातियां थीं। उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति तपोव्रत चक्रवर्ती और न्यायमूर्ति राजशेखर मंथा की खंडपीठ ने कहा कि निर्धारित प्रक्रिया का पालन किए बिना ही ममता सरकार ने ये आरक्षण दिया है। इसके अंतर्गत अब तक जारी किए गए ओबीसी सर्टिफिकेट्स भी न्यायालय ने रद्द कर दिए।

मई 2011 में प.बंगाल की सत्ता संभालने के बाद से ही मुख्यमंत्री ममता बनर्जी यह दावा करती रही है कि उनकी सरकार ने लगभग सभी मुसलमानों को ओबीसी की श्रेणी में ला दिया है। इस लोकसभा चुनाव प्रचार के दौरान भी उन्होंने इसे बार-बार दोहराया।

कोर्ट ने अपने फैसले में कहा कि मुसलमानों के कुछ वर्गों को राजनीतिक उद्देश्यों के लिए ओबीसी आरक्षण दिया गया। यह पूरे समुदाय और लोकतंत्र का अपमान है। न्यायालय ने यह भी कहा है कि प.बंगाल सरकार द्वारा दिया गया ओबीसी आरक्षण जल्दबाजी में दिया गया, प्रक्रिया पूरी किए बिना दिया गया। न्यायालय को शंका है कि ममता बनर्जी के (मुसलमानों का आरक्षण देने के) चुनावी वादे को पूरा करने के लिए असंवैधानिक तरीका अपनाकर यह आरक्षण दिया गया।

न्यायालय ने यह भी कहा कि ''राजनीतिक लाभ के लिए मुस्लिम समुदाय को वस्तु के रूप में समझा गया। उनका वोट बैंक के रूप में इस्तेमाल किया गया।''

न्यायालय ने 2010 से 2024 के बीच दिए गए 'अन्य पिछड़ा वर्ग' के प्रमाण पत्रों को रद्द कर दिया है तथा ओबीसी आयोग को नए सिरे से सूची बनाने का निर्देश दिया है।

प.बंगाल की मुख्यमंत्री ने इस निर्णय के दूसरे दिन एक चुनावी सभा को संबोधित करते हुए बड़े गुस्से से कहा कि यह भाजपा का फैसला है। वे इसे कदापि स्वीकार नहीं करेंगी। उन्होंने इस आदेश को दुस्साहस बताते हुए देश के लिए कलंक बताया। आश्चर्य है कि संविधान की शपथ लेकर मुख्यमंत्री बना एक व्यक्ति न्यायालय के आदेश को न मानने की घोषणा कर रहा है। बाद में उन्होंने कहा कि वे इसे सुप्रीम कोर्ट में चुनौती देंगी।

उच्च न्यायालय के इस निर्णय को ममता बनर्जी के लिए एक बड़े झटके के रूप में देखा जा रहा है। जानकारों का कहना है कि ममता बनर्जी ने बांग्लादेशी घुसपैठियों एवं रोहिंग्याओं के कुछ समुदायों तक को ओबीसी आरक्षण में शामिल कर लिया था।

जोधपुर : 24 मई को जोधपुर में जेएनवीयू के बृहस्पति सभागार में राजस्थान पत्रिका के जयकुमार भाटी को नारद भूषण सम्मान तथा तीन अन्य पत्रकारों को भी सम्मानित किया गया।

उदयपुर : उदयपुर स्थित कार्यालय पर 24 मई को 'पत्रकारिता के लिए अवसर और चुनौतियां' विषय पर परिचर्चा का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि इतिहास संकलन समिति के प्रान्त संगठन मंत्री रमेश चंद्र शुक्ला थे। ■

उत्कट देश प्रेम की प्रतिमूर्ति थे डॉक्टर जी

प्रात: स्मरणीय डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार जी का जीवन राष्ट्रभक्ति की अखण्ड प्रेरणा का स्रोत है। जो भी उनके सम्पर्क में आया वह राष्ट्रकार्य में पूरे उत्साह से हिंदू समाज की सेवा में अग्रसर होता गया। उनके निजी और सार्वजनिक चारित्र्य में पूरी-पूरी एकरूपता थी, ऐसे उनके जीवन के अनेक उदाहरण हैं। पाठकों के लिए ऐसी ही तीन प्रेरणादायी घटनाएं यहां दी जा रही हैं-

उत्कट देशप्रेम

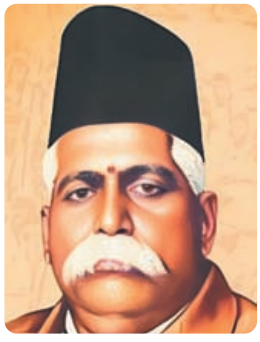

बात तब की है जब डॉक्टर जी नीलसिटी स्कूल में पढ़ते थे। एक निरीक्षक महोदय (इन्सपेक्टर ऑफ स्कूल) निरीक्षण के लिए विद्यालय में आने वाले थे। डॉक्टर जी ने विद्यार्थियों से मिल कर सरकार की दमन-नीति का जवाब देने का निश्चय किया।

निश्चित समय पर निरीक्षक महोदय जैसे ही एक कक्षा में पहुंचे सभी विद्यार्थियों ने एक साथ जोर से 'वन्देमातरम्' का उद्घोष किया। दूसरी कक्षा में पहुंचे, वहां भी इसी तरह उनका स्वागत हुआ। इस स्वागत से निरीक्षक महोदय झल्ला गये और तुरन्त विद्यालय से चले गये। मामला काफी आगे बढ़ा। जांच प्रारंभ हुई किन्तु एक भी विद्यार्थी यह बताने के लिए तैयार नहीं हुआ कि इस प्रदर्शन का नेतृत्व किसने किया है? जांच की कार्यवाही के विरुद्ध विद्यालय में हड़ताल हुई। सबसे क्षमा मांगने के लिए कहा गया । डॉक्टर जी ने क्षमा मांगना अस्वीकार कर दिया ओर स्पष्ट शब्दों में कहा- ''मातृभूमि की जय बोलना कोई अपराध नहीं है, अत: मैं किस बात की क्षमा मांगू।'' डॉक्टर जी विद्यार्थियों के नेता थे। उनकी प्रखर देशभक्ति और दृढ़ता के कारण उनका नाम स्कूल से काट दिया गया। डॉक्टर जी घबराये नहीं। अपने कार्य के परिणामों को उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया पर लक्ष्य से विचलित नहीं हुए।

समाज का अभिमान

नागपुर स्टेशन पर अनेक यात्री सामान उठाए हुए इधर-उधर जगह खोज रहे थे। ठसाठस भरे यात्रियों वाली उस रेल-गाड़ी में भी एक डिब्बा बिल्कुल खाली था। उस पर लिखा था-'केवल यूरोपीय यात्रियों के लिए।' डॉक्टर जी की दृष्टि जब उस डिब्बे पर गई तो वे रुक गये। एक ओर तो अपने देश के यात्रियों को कठिनाई से भी जगह नहीं मिल रही थी और दूसरी ओर यूरोपीय लोगों के लिए इतनी व्यवस्था थी। डॉक्टर जी से यह सहा नहीं गया। वे खिड़की के रास्ते उस डिब्बे में गये।

यूरोपीय लोगों के लिए सुरक्षित डिब्बे में एक भारतीय व्यक्ति को इस प्रकार घुसता देखकर एक टिकिट कलेक्टर तुरंत दौड़ा हुआ वहां आया और डॉक्टर जी को डिब्बे से बाहर जाने के लिए कहने लगा। डॉक्टर जी ने कहा कि डिब्बे का दरवाजा खोलने पर ही वे बाहर आवेंगे। टिकिट कलेक्टर ने दरवाजे का ताला खोला तो डॉक्टर जी ने स्वयं डिब्बे से उतरने के स्थान पर बाहर खड़े निराश यात्रियों की भीड़ को भी अंदर बुला लिया। अकेला टिकट कलेक्टर किस-किस को रोकता? देखते ही देखते वह डिब्बा भी यात्रियों से भर गया। टिकिट कलेक्टर चिढ़ गया और स्टेशन मास्टर को बुला लाया। स्टेशन मास्टर ने डॉक्टर जी से कहा कि ''आप लोग यहां नहीं बैठ सकते अन्यत्र जगह खोजें।'' किन्तु डॉक्टर जी ने ऐसा करना अस्वीकार कर दिया। डॉक्टर जी के आगे अपनी एक न चलती देख कर स्टेशन मास्टर ने डिब्बे में बैठे अन्य यात्रियों को डांटते हुए उतर जाने को कहा। कुछ लोग सहम कर अपना सामान उठाने को तैयार हुए तो डॉक्टर जी ने और जोर से डांट कर उन्हें बैठ जाने को कहा। तब सभी यात्री चुपचाप बैठ गये। कोई भी अपने स्थान से नहीं हिला। निराश स्टेशन मास्टर चुपचाप वहां से चला गया। ऐसा था उनका अपने देश और समाज का अभिमान! (संकलित)

उदात्त ध्येय

नागपुर के सीताबर्डी किले पर अंग्रेजों का झण्डा यूनियन जैक लहराता देखकर उन्होंने सोचा कि यदि यूनियन-जैक को हटा कर वहां भगवा लगा दिया तो किला फतह हो जावेगा। बस फिर क्या था! श्री वझे गुरुजी के घर पढ़ाई के लिए जिस कमरे में डॉक्टर जी (बालक केशव) अपने बाल साथियों के साथ एकत्रित होते थे वहां से किले में पहुंचने की इच्छा से एक सुरंग खोदी जाने लगी। एकदम चुपचाप और अज्ञात। अपने बाल साथियों के साथ सुरंग में गैंती-फावड़े चलते थे। कमरे में एक गड्ढा हो चुका था और एक कोने में मिट्टी का ढेर लगा था। बालक कितनी भूमि खोदते! आखिर एक दिन इसका पता चल गया। किन्तु गुरुजी को जब अपने नन्हे शिष्यों के उद्देश्य का पता चला तो वे मन ही मन प्रसन्न हो उठे। इस समय डॉक्टर जी की आयु केवल 12 वर्ष की थी।

हिन्दू समाज का संगठन इस देश की राष्ट्रीय आवश्यकता है : बाला साहब

5 अप्रैल, 1982 को दिल्ली के फिरोजशाह कोटला मैदान में आयोजित प्रबुद्ध नागरिक सम्मेलन में तत्कालीन सरसंघचालक बाला साहब देवरस द्वारा दिए गए बौद्धिक का अंश-

'हिन्दू' शब्द बड़ा व्यापक है। 'हिन्दू' शब्द का उपयोग करने से किसी एक उपासना पद्धति या पूजा-पद्धति का बोध नहीं होता है। सनातनी लोग मूर्ति पूजा पर विश्वास करते हैं और आर्य समाजी लोग मूर्ति पूजा का विरोध करते हैं। फिर भी दोनों ही हिन्दू हैं। 'हिन्दू' शब्द उपासना पद्धति का द्योतक नहीं है, यह सांस्कृतिक शब्द है, यह राष्ट्रीय शब्द है, हमारी धारणा है कि इस देश में रहने वाले जो-जो भी बन्धु इस देश की मिट्टी में ईमान रखते हैं और इस देश में हजारों वर्षों से चलते आये सांस्कृतिक और राष्ट्रीय प्रवाह का स्वयं को अंग मानते हैं, वे सब हिन्दू शब्द के अंतर्गत आते हैं। बंबई उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश रहे श्री मुहम्मद करीम छागला ने स्पष्ट शब्दों में कहा था कि 'भारत में रहने वाले सभी मुसलमान हिन्दू है।'

हिन्दू शब्द के बारे में हमारी ऐसी धारणा होते हुए भी आज की विशिष्ट परिस्थितियों में हमारा ध्याना प्रचलित अर्थ में जिसको हिन्दू समाज कहते हैं, उसी को संगठित करने में लगा है, यह बात मानने में मुझे कोई आपत्ति नहीं। प्रचलित अर्थ में हिन्दू कौन होता है? सरकार हिन्दुओं के लिए कानून बनाती है। इसकी परिभाषा पहले करनी पड़ती है कि वह कानून किन-किन पर लागू होगा। सरकार की परिभाषा है कि मुसलमान, क्रिश्चियन, यहूदी और पारसी छोड़कर इस देश में जो सनातनी, आर्य समाजी, ब्रह्म समाजी, बौद्ध, सिक्ख, जैन आदि हैं और जिनके लिए कोई निश्चित नाम नहीं है ऐसे जो बन्धु हैं, उन सारे बन्धुओं पर यह हिन्दू कानून लागू होगा, यह सरकार की परिभाषा है। सरकार ने ऐसी जो परिभाषा बताई है उसका ऐतिहासिक या पारम्परिक कारण अवश्य होगा। प्रचलित अर्थ से जब हम हिन्दू समाज की बात करते हैं तो उसमें ये सारे बन्धु आते हैं। संस्कृत का श्लोक इस प्रकार से है-

यं वैदिका मन्त्रदृशः पुराणः इन्द्रं यमं मातरिश्वानमाहुः।
वेदान्तिनोऽनिर्वचनीयमेकं यं ब्रह्मशब्देन विनिर्दिशन्ति।।
शैवाः यमीशं शिव इत्यवोचन् यं वैष्णवा विष्णुरिति स्तुवन्ति।
बुद्धस्तथाऽर्हन्निति बौद्धजैनाः सत् श्री अकालेति च सिक्ख संता।।
शास्तेति केचित् कतिचित् कुमारः स्वामीति मातेति पितेति भक्त्या।
यं प्रार्थयन्ते जगदीशतारं स एक एव प्रभुरद्वितीयः।।

(प्राचीन काल के मन्त्रद्रष्टा ऋषियों ने जिसे इन्द्र, यम, मातरिश्वान कहकर पुकारा और जिस एक अनिर्वचनीय का वेदान्ती लोग ब्रह्म शब्द से निर्देश करते हैं, शैव जिसकी शिव और वैष्णव जिसकी विष्णु कह कर स्तुति करते हैं, बौद्ध और जैन जिसे बुद्ध और अर्हत कहते हैं, तथा सिक्ख सन्त जिसे सत् श्री अकाल कहकर पुकारते हैं, जिस जगत के स्वामी को शास्ता, तो कोई कुमार स्वामी, कोई स्वामी, माता, पिता कहकर भक्ति पूर्वक प्रार्थना करते हैं- वह प्रभु एक ही है और अद्वितीय है।) ऐसा मानने वाले हिन्दू समाज को संगठित करने का हमारा लक्ष्य और प्रयास है। यह बात मानने में हमको कोई संकोच नहीं है।

भारत अर्थात् हिन्दू समाज का देश

हिन्दू समाज का संगठन इस देश की राष्ट्रीय आवश्यकता है। इसका कारण स्पष्ट है। हिन्दुस्थान और यहाँ रहने वाला प्रचलित अर्थ से हिन्दू समाज, यह एकीकरण है, यह समीकरण है, यह Indentification है। सारी दुनिया इस देश को हिन्दू समाज के देश के नाते से ही हजारों वर्षों से जानती है। जब विदेश से विद्वान इस देश में आयेंगे और इस देश के साहित्य का अध्ययन करने का विचार करेंगे तो किन ग्रन्थों का अध्ययन करेंगे? वेदों का, उपनिषदों का, रामायण, महाभारत, गीता का, बौद्ध साहित्य, जैन साहित्य, सिख साहित्य का। बाइबिल और कुरान का अध्ययन करने के लिए कोई भारत नहीं आयेगा, यह स्वाभाविक है। हजारों वर्षों के संघर्ष के पश्चात् भी आज इस देश में 85 प्रतिशत (2011 की जनगणनानुसार 79.8 प्रतिशत) हिन्दू समाज इस देश की रीढ़ है। यदि रीढ़ मजबूत नहीं होगी तो यह देश बलवान हो ही नहीं सकता, इसलिए जो हिन्दू समाज है, इसको जाति-पांति , पंथ-प्रान्त, भाषा इत्यादि भेदों से ऊपर उठाकर संगठित करना, बलवान करना, यह राष्ट्रीय आवश्यकता है। यह बात संकुचित अथवा साम्प्रदायिक नहीं है। और ऐसा करने वाले संगठन को 'ये इसके विरोध में है अथवा उसके विरोध में हैं कहना, इस हिन्दू समाज के तत्त्वज्ञान के अज्ञान का प्रतीक है। हिन्दुओं के इतिहास के प्रति घोर अन्याय और अपमान है। हिन्दुओं का तत्वज्ञान रहा है 'एकं सद् विप्राः बहुधा वदन्ति' अर्थात् सत्य एक होता है, विद्वान लोग उसे अनेक प्रकार से कहते हैं। ■

शाखा पर 35 वर्ष पूर्व हुआ था आतंकी हमला

अगले दिन फिर लगी शाखा

बात 25 जून, 1989 की है। मोगा (पंजाब) के नेहरू पार्क में हर दिन की भांति सुबह 6 बजे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखा लगी थी। इस दिन यहाँ कई शाखाओं का एकत्रीकरण था। शाखा की गतिविधियां चल रही थीं कि अचानक कुछ लोग आए और उन्होंने स्वयंसेवकों से संघ ध्वज उतारने को कहा। स्वयंसेवकों ने ऐसा करने से मना कर दिया तभी उन लोगों ने स्वयंसेवकों पर गोलीबारी शुरू कर दी। पार्क में सैर कर रहे लोगों में अफरा-तफरी मच गई। देखते ही देखते 25 स्वयंसेवकों की जानें चली गईं और 33 लोग घायल हो गए।

यह आतंकी हमला था। षड्यंत्रकारियों का उद्देश्य हिन्दू-सिख एकता को चोट पहुंचाना था। वे चाहते थे कुछ ऐसा नैरेटिव बने कि सिखों ने हिन्दुओं को मारा। कुछ लोगों ने भड़काना भी शुरू कर दिया-सिखों ने अब लगाया है शेर की पूँछ को हाथ। लेकिन सामाजिक सद्भाव व एकता के लिए जीने मरने वाले संघ स्वयंसेवकों ने मामले की संवेदनशीलता को समझा और सद्भाव बनाए रखते हुए आतंकियों को मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए अगले दिन फिर शाखा लगाई और सुबह वे गा रहे थे- कौन कहंदा हिन्दू-सिख वक्ख ने, ए भारत माँ दी सज्जी-खब्बी अक्ख ने' अर्थात् कौन कहता है कि हिंदू-सिख अलग-अलग हैं, ये तो भारत माता की बाईं और दाईं आँख के समान हैं।

इस नृशंस नरसंहार के बाद मोगा के आमजन ने भी आपा नहीं खोया। सभी घायलों को दोनों समुदाय के लोगों ने मिलकर अस्पतालों में भर्ती करवाया और उन्हें अपना खून दिया। बलिदानियों के अंतिम संस्कार में अटल बिहारी वाजपेयी भी पहुंचे। उनके मार्मिक भाषण ने सद्भावना की नींव को मजबूत करने का काम किया। बाद में नेहरू पार्क का नाम बदलकर शहीदी पार्क कर दिया गया और सभी बलिदानियों की याद में शहीदी स्मारक का निर्माण हुआ। 24 जून,1990 को प्रो. राजेन्द्र सिंह 'रज्जू भैया' (संघ के चतुर्थ सरसंघचालक) ने इसका उद्घाटन किया।

इस गोली कांड में लेखराज धवन, बाबूराम, भगवान दास, शिवदयाल, मदन गोयल, मदन मोहन, भगवान सिंह, गजानन्द, अमन कुमार, ओमप्रकाश, सतीश कुमार, केसो राम, प्रभजोत सिंह, नीरज, मुनीश चौहान, जगदीश भगत, वेदप्रकाश पुरी, ओमप्रकाश और छिन्दर कौर (पति-पत्नी), डिंपल, भगवानदास, पण्डित दुर्गादत्त, प्रह्लाद राय, जगतार राय सिंह, कुलवन्त सिंह आदि स्वयंसेवक सदा के लिए भारत माता की गोद में सो गए।

बलिदान दिवस : 16 जून

राजा दाहिरसेन

आज के बलूचिस्तान, ईरान, कराची और पूरे सिन्ध क्षेत्र के राजा थे दाहिरसेन। वे सिन्ध के अंतिम हिंदू शासक माने जाते हैं और उन्होंने ही सिंध राज्य की सीमाओं का कन्नौज, कंधार, कश्मीर और कच्छ तक विस्तार किया था। उनका जन्म 663 ई. में हुआ था। राजा श्री दाहिरसेन एक प्रजावत्सल राजा थे। गौरक्षक के रूप में उनकी ख्याति दूर-दूर तक फैली हुई थी। सिंध राज्य के वैभव की कहानियां सुनकर ईरान के शासक हज्जाम ने 712 ई. में अपने सेनापति मोहम्मद बिन कासिम को एक विशाल सेना देकर सिन्ध पर हमला करने के लिए भेजा। कासिम ने देवल के किले पर कई आक्रमण किए पर राजा श्री दाहिरसेन और उनके वीरों ने हर बार उसे पीछे धकेल दिया। परंतु कई बार हारने के बावजूद अंततः मोहम्मद बिन कासिम ने दाहिरसेन को विश्वासघात कर हरा दिया। 16 जून, 712 ई. को भारत भूमि की रक्षा करते हुए उन्होंने अपना बलिदान दे दिया था। उनके बलिदान होने के बाद उनकी पत्नी, बहन और दोनों पुत्रियों ने भी अपना बलिदान किया। जिसके बाद सिंध को अल-हिलाज के खलीफा द्वारा अपने राज्य में शामिल कर लिया गया और खलीफा के प्रतिनिधियों द्वारा सिंध में शासन प्रशासन चलाया गया। इस्लामिक आक्रमणकारियों ने पूरे क्षेत्र में तलवार की नोक पर लगातार हिन्दू धर्मावलम्बियों का मतांतरण किया और इस क्षेत्र में इस्लाम का प्रसार किया।

- मनोज गर्ग

अढ़ाई दिन का झोंपड़ा असली मालिकों को सौंपा जाए : जैन संत सुनील सागर जी

मंदिर व संस्कृत विद्यालय तोड़कर बनाई गई थी मस्जिद

अजमेर में स्थित भारतीय पुरातत्व विभाग द्वारा संरक्षित एक भवन जिसे मस्जिद 'अढ़ाई दिन का झोंपड़ा' कहा जाता है, उसे जैन मुनि आचार्य सुनील सागर जी ससंघ बीती 7 मई को देखने गए। आचार्यश्री के साथ जैन समाज के लोग तथा विश्व हिंदू परिषद के कार्यकर्ता भी थे।

आचार्यश्री ने अढ़ाई दिन के झोंपड़े का अंदर से पूरा चक्कर लगाया। इसके बाद एक स्थान पर बैठकर संघ व साथ आए लोगों को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि जो वस्तु जिसकी है वह उसके अधिकार में होनी चाहिए। अगर यहां पूजा-अर्चना करना हमारी परंपरा रही है तो ऐसा करना भी चाहिए। जब हम दूसरे की संपत्ति पर अपना अधिकार जताते हैं तो यह शत्रुता बढ़ाता है। हमें सद्भाव के लिए प्रयास करना चाहिए। उनका कहना था कि यह महज एक झोंपड़ा नहीं बल्कि एक महल है। वहां रामायण व महाभारत के कई प्रतीक दिखाई देते हैं। देवी देवताओं की कई टूटी हुई मूर्तियां भी मिली, फिर भी ये विडम्बना है कि इसे मस्जिद कहा जाता है।

इतिहास

माना जाता है कि यह भवन मूल रूप से एक शानदार संस्कृत कॉलेज (सरस्वती कंठाभरण महाविद्यालय) का है जिसमें ज्ञान और बुद्धि की हिंदू देवी माता सरस्वती को समर्पित एक मंदिर था, इस भवन का निर्माण महाराजा विग्रहराज चतुर्थ द्वारा करवाया गया था। कई दस्तावेजों के अनुसार, मूल इमारत चौकोर आकार की थी। इसके प्रत्येक कोने पर एक टावर था। 19वीं शताब्दी में वहां सिक्का भी मिला था, जो 1153 ई.का था। विशेषज्ञों का मानना है कि मूल भवन का निर्माण 1153 के आसपास हुआ था।

हालांकि कुछ स्थानीय जैन किंवदंतियाँ बताती हैं कि भवन का निर्माण 660 ईस्वी में सेठ विरमदेव काला द्वारा करवाया गया था। इसका निर्माण एक जैन तीर्थ स्थल के रूप में किया गया था और पंच कल्याणक पर्व मनाया जाता था। उल्लेखनीय है कि इस स्थल पर उस समय के जैन और हिंदू दोनों वास्तुकला के तत्व मौजूद हैं। दीवारों पर स्वास्तिक वहां भी मिलते हैं।

क्यों कहते हैं अढ़ाई दिन का झोंपड़ा ?

1192 में तराइन के दूसरे युद्ध में महाराजा पृथ्वीराज चौहान की हार के बाद मुहम्मद गोरी ने अजमेर पर कब्जा कर लिया और अपने सेनापति कुतुबुद्दीन ऐबक को मंदिर तोड़ने के आदेश दे दिए। मोहम्मद गोरी मंदिर परिसर में यथाशीघ्र नमाज पढ़ना चाहता था। कुतुबुद्दीन ऐबक को मंदिर तोड़कर इस्लामिक संरचना बनाने में अढ़ाई दिन का समय लगा, इसलिए इसे अढ़ाई दिन का झोंपड़ा कहा जाता है। कुछ लोग इसे पंजाबशाह बाबा के उर्स से भी जोड़ते हैं जो यहां पर ढाई दिन चलता है।

अंजुमन सचिव की आपत्तिजनक टिप्पणी

बीती 8 मई को अंजुमन सचिव सैयद सरवर चिश्ती एक कथित ऑडियो में कहते हुए सुनाई दिए कि 'कैसे ढाई दिन के झोंपड़ा में बिना कपड़े के लोग अंदर चले गए, अंदर मस्जिद भी है।' इससे एक दिन पूर्व जैन संत अचार्य सुनील सागर जी व अन्य संतों के कपड़ों को लेकर अभद्र टिप्पणी करते हुए उन्हें ढाई दिन के झोंपड़े में प्रवेश करने से रोकने की कोशिश की गई थी।

13 मई को अजमेर के सकल जैन समाज व विश्व हिन्दू परिषद सहित सर्व समाज की ओर से कलक्टर को ज्ञापन देकर अंजुमन सचिव पर कार्रवाई करने की मांग की गई। जैन संत वस्त्र त्याग कर प्रत्येक मौसम में दिगंबर अवस्था में कठिन तपस्या करते हैं। यह उनकी जीवन पद्धति है। इस संबंध में उनकी दिगंबर अवस्था को लेकर अंजुमन सचिव द्वारा की गई भद्दी टिप्पणी अमर्यादित व अशोभनीय है।

पुस्तक : भारतबोध और भक्ति कविता

लेखक : प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय

प्रकाशक : यश पब्लिकेशंस, दिल्ली **मूल्य :** 795

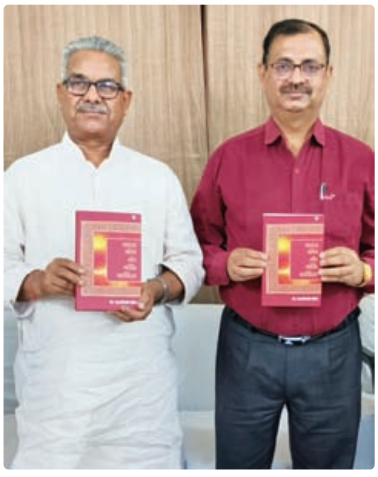

लेखक की पुस्तक का विमोचन करते संघ के सह सरकार्यवाह डॉ.कृष्ण गोपाल (बाएं)

प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय मध्यकालीन भारतीय साहित्य के प्रतिष्ठित तथा चर्चित विद्वान हैं। हिंदी साहित्य के आदिकाल और भक्तिकाल पर आप निरंतर लिखते रहते हैं। केंद्रीय हिंदी संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग (शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार) के अध्यक्ष के रूप में आपके संपादन में विपुल कोश तथा साहित्य प्रकाशित हुआ है। भक्ति साहित्य को पढ़ने की अनेक दृष्टियों के बीच आपने यह स्थापित किया है कि यह साहित्य सामाजिक समरसता के लिए है। हिंदी साहित्य के इतिहास में यह कालखंड 300 वर्षों का है लेकिन इसकी परंपरा 200 वर्ष पीछे आदिकाल में तथा 100 वर्ष आगे रीतिकाल में भी देखी जा सकती है। लगभग 500 वर्षों तक यह साहित्य संपूर्ण भारत में रचा गया। विदेशी आक्रांताओं के शासन में भक्त कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से बहुसंख्यक पीड़ित, प्रताड़ित जनता को जीने का संबल तो दिया ही संघर्ष की क्षमता भी दी। इन कवियों ने एकतरफ निर्गुण ब्रह्म के स्वरूप को रखा वहीं दूसरी ओर भगवान श्रीराम की मर्यादा को। श्रीकृष्ण के मनोहारी स्वरूप के साथ नीरस होते जा रहे जीवन में सुधारस घोला वहीं अत्याचारी कंस और दुर्योधन के मद का मर्दन करवाया।

इस पुस्तक में पाठक संपूर्ण भारत के भक्ति साहित्य को पढ़ सकता है। इसमें तिरुवल्लुवर, आंडाल, कुलशेखर आलवार, हेमचंद्राचार्य, विद्यापति, रामानुजाचार्य,संत नामदेव, श्रीमंत शंकरदेव, माधवदेव, संत रैदास, मीराबाई, गवरीबाई, संत रज्जब, वषना, संत निश्चलदास, सूफीमत तथा नजीर अकबराबादी पर स्वतंत्र रूप से लिखे गए विस्तृत आलेख हैं। ये आम पाठकों के साथ ही भारतीय भाषाओं के शोधार्थियों तथा विद्वानों के लिए उपयोगी हैं। भक्ति और भक्ति साहित्य में रुचि रखने वाले विद्वानों और पाठकों सहित पुस्तक उनके लिए भी उपयोगी है जो भारत को भारत की दृष्टि से समझना चाहते हैं। संप्रति लेखक राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर के हिंदी विभाग में प्रोफेसर हैं तथा पाथेय कण संस्थान के अध्यक्ष हैं।

समीक्षक: डॉ.उमेश चन्द्र सिरवारी, केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस (21 जून) पर विशेष

शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य के लिए योग

योग के निरंतर अभ्यास से व्यक्ति स्वस्थ और दीर्घायु बना रहता है। भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अगुवाई में संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाने के प्रस्ताव को मंजूरी दी थी। योग दिवस के उपलक्ष्य में पाठकों के लिए एक सरल व उपयोगी आसन यहां दिया जा रहा है–

भुजंगासन

भुजंग शब्द का अर्थ है सांप। इस आसन में शरीर की आकृति सांप के फन की तरह ऊपर उठती है जिसके कारण इसे भुजंगासन कहते हैं।

अभ्यास विधि-

- सर्वप्रथम पेट के बल लेट जाएं, दोनों पैर मिला लें।
- ललाट को जमीन पर टिका रहने दें।
- हाथों को शरीर के ठीक बगल में ऐसा रखें कि हथेलियां और कोहनियां जमीन पर टिके रहें।
- धीरे-धीरे श्वांस अंदर खींचते हुए ठुड्डी और नाभि क्षेत्र तक शरीर को ऊपर उठाएं।
- कुछ समय तक इस स्थिति में रहने के बाद पुनः लौटते हुए ललाट को जमीन पर टिकाएं।
- फिर से उपरोक्त क्रिया दोहराएं।

लाभ

- तनाव कम करने के लिए यह आसन सर्वश्रेष्ठ है।
- उदर के अतिरिक्त वसा को घटाता है व कब्जियत दूर करता है।
- पीठ दर्द और श्वास नली से संबंधित समस्यों को दूर करता है।

सावधानियां

- जिन लोगों की उदर (पेट) संबंधी सर्जरी हुई है, उन्हें 2-3 महीने तक इस आसन को नहीं करना चाहिए।
- जो लोग हार्निया, अल्सर से पीड़ित हों, उन्हें इस आसन का अभ्यास नहीं करना चाहिए।

देशभर में संघ शिक्षा वर्गों का हुआ शुभारम्भ

संघ के प्रशिक्षण वर्ग राष्ट्रीय एकात्मता की अनुभूति देते हैं : अभ्यंकर

घर की आधुनिक सुख-सुविधाओं से दूर रहकर इस भीषण गर्मी में सुबह से रात तक शारीरिक-मानसिक व बौद्धिक रूप से कार्यकर्ताओं को योग्य बनाने के लिए आयोजित किये जाते हैं संघ के प्रशिक्षण वर्ग। राष्ट्र सेवा का संकल्प तथा समरस समाज के निर्माण का उद्देश्य लेकर लगने वाले ये वर्ग प्रति वर्ष मई-जून माह में लगाए जाते हैं। इस बार देश के लगभग 100 स्थानों पर ऐसे वर्ग लगे हैं।

बीती 17 मई से नागपुर में कार्यकर्ता विकास वर्ग (द्वितीय) का शुभारम्भ हुआ। इस अवसर पर संघ के अ.भा.सेवा प्रमुख व वर्ग के पालक अधिकारी श्री पराग अभ्यंकर ने कहा कि नागपुर जाकर संघ कार्य को जानना और उसकी साधना करने का सौभाग्य प्राप्त हो, ऐसी भावना स्वयंसेवकों में होती है। संघ कार्य जीवन कार्य हो, यह भाव भी स्वयंसेवकों के मन में रहता है। यह भूमि डॉ. हेडगेवार तथा श्री गुरुजी की तपोस्थली है।

उन्होंने बताया कि स्वतंत्रता के पहले बहुत सारी चुनौतियां थीं। संघ ने देश की स्वतंत्रता के लिए भी कार्य किया। स्वयं डॉक्टर जी जंगल सत्याग्रह में सक्रियता से सहभागी हुए थे। संघ कार्य में प्रशिक्षण वर्ग का अत्यंत महत्त्व है। कार्यकर्ता की सोच क्या होनी चाहिए, उसके सामने चुनौतियां कौन-सी है, यह ध्यान में रखकर वर्गों की अवधि, पाठ्यक्रम व व्यवस्थाओं में भी बदलाव किए गए हैं। पहले के वर्गों में शारीरिक कार्यक्रमों के अंतर्गत धैर्य और साहस बढ़ाने पर जोर दिया जाता था। अभी चुनौतियां बदली हैं, उसका विमर्श समझना होगा। चुनौतियों का प्रत्युत्तर देना है तो उस तरह के विषयों का समावेश वर्ग में किया गया है। संगठित हिन्दू समाज की वैश्विक दृष्टि बनाना, समाज की सज्जन-शक्ति को जोड़कर अपनी शक्ति कैसे बढ़े, इसका व्यावहारिक प्रशिक्षण भी वर्ग में शिक्षार्थियों को मिलेगा। यहाँ 936 कार्यकर्ता प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। इनमें राजस्थान क्षेत्र से 105 स्वयंसेवक बंधु पहुँचे हैं।

प्रशिक्षण वर्गों की रचना में परिवर्तन

जानकारी हो कि संघ के कार्यकर्ताओं को कार्य पद्धति की दृष्टि से तीन वर्ग करने होते है जिन्हें अब तक प्रथम, द्वितीय व तृतीय वर्ष कहा जाता था। 15-17 मार्च, 2024 को नागपुर में आयोजित अ.भा.प्रतिनिधि सभा में वर्तमान परिदृश्य को देखते हुए नवीन पाठ्यक्रमों के साथ नए सिरे से प्रशिक्षण वर्गों की रचना की गई। नवीन रचना में 15 दिन का संघ शिक्षा वर्ग, 20 दिन का कार्यकर्ता विकास वर्ग (प्रथम) व 25 दिन का कार्यकर्ता विकास वर्ग (द्वितीय) प्रारम्भ हुए हैं। इन वर्गों में व्यावहारिक प्रशिक्षण का पाठ्यक्रम भी शामिल किया गया है।

राजस्थान क्षेत्र को संघ कार्य रचना के अनुसार तीन प्रांतों में विभक्त किया हुआ है। **जयपुर प्रांत** में भरतपुर, जयपुर व सवाईमाधोपुर, **जोधपुर प्रांत** में पाली, नोखा व श्रीडूंगरगढ़ तथा **चित्तौड़ प्रांत** में चित्तौड़, जहाजपुर (भीलवाड़ा) व डूंगरपुर में इस बार संघ शिक्षा वर्ग (15 दिवसीय) लगे हैं। तीनों प्रांत के घोष वर्ग बस्सी (जयपुर), नोखा (जोधपुर) व किशनगढ़ (चित्तौड़) में लगे हैं।

कार्यकर्ता विकास वर्ग (प्रथम), कोटा

कोटा में बीती 19 मई से प्रारम्भ हुए राजस्थान क्षेत्र के कार्यकर्ता विकास वर्ग (प्रथम) के शुभारम्भ अवसर पर संघ के क्षेत्र प्रचारक श्री निम्बाराम ने कहा कि यह वर्ग विशेष रूप से प्रवासी कार्यकर्ता अर्थात् एक शाखा से अधिक शाखाओं की जिम्मेदारी निभाने वालों के लिए है। प्रशिक्षित एवं योग्य कार्यकर्ता का प्रभाव कार्य क्षेत्र (समाज) में भी दिखाई देता है। वर्ग में सेवा, संपर्क व प्रचार का व्यावहारिक प्रशिक्षण स्वयंसेवकों को दिया जा रहा है। यहां 359 शिक्षार्थी प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। अपने सम्बोधन से पहले क्षेत्र प्रचारक जी ने प्रचार की गतिविधियों की प्रदर्शनी के लिए स्मार्ट स्क्रीन बोर्ड द्वारा प्रदर्शनी का उद्घाटन भी किया। इस दौरान वर्ग के पालक अधिकारी श्री मनोज कुमार सहित अन्य पदाधिकारी भी उपस्थित थे। ■

आगामी पक्ष के विशेष अवसर (16 से 30 जून, 2024)
(ज्येष्ठ शुक्ल 10 से आषाढ़ कृष्ण 9 तक)

जन्म दिवस

ज्येष्ठ शु.11 (18 जून)– गायत्री जयंती
18 जून (1861) – बाबू देवकीनंदन खत्री जयंती
ज्येष्ठ शु.12 (19 जून)– सुपार्श्वनाथ जयंती (7वें तीर्थंकर)
ज्येष्ठ पूर्णिमा (22 जून)– संत कबीर जयंती
आषाढ़ कृष्ण 1 (22 जून)– छठें गुरु हरगोविंद सिंह जयंती (प्रा.मत)
24 जून (1868) – इतिहासकार काशीनाथ राजवाड़े जयंती
27 जून (1838) – बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय जयंती

बलिदान दिवस/पुण्यतिथि

16 जून(1918) – क्रांतिकारी नलिनी बागची बलिदान
16 जून (712) – महाराजा दाहिर सेन बलिदान
17 जून (1674) – माता जीजाबाई पुण्यतिथि
17 जून (1996) – बालासाहब देवरस पुण्यतिथि
18 जून (1858) – महारानी लक्ष्मीबाई बलिदान
18 जून(1576) – हल्दीघाटी युद्ध में झालामान बलिदान
19 जून (1942) – बालमुकुन्द बिस्सा बलिदान
21 जून (1940) – डॉ.हेडगेवार पुण्यतिथि
22 जून (1858) – सेठ अमरचंद बांठिया को फांसी
23 जून (1997) – आचार्य तुलसी पुण्यतिथि
23 जून (1953) – डॉ.श्यामाप्रसाद मुखर्जी बलिदान
24 जून (1564) – महारानी दुर्गावती बलिदान
27 जून (1963) – दादाराव परमार्थ पुण्यतिथि
27 जून (1839) – महाराजा रणजीतसिंह पुण्यतिथि
29 जून (1965) – स्वामी ध्रुवानन्द सरस्वती पुण्यतिथि

महत्वपूर्ण घटनाएं/अवसर

ज्येष्ठ शु. 10(16 जून)– सेतुबंध रामेश्वर प्रतिष्ठा दिवस
19 जून (1677) – नेताजी पालकर शुद्धि दिवस
ज्येष्ठ शु. 13 (20 जून)–हिन्दू साम्राज्य पुनर्स्थापना दिवस
25 जून (1975) – देश में आपातकाल लगा
25 जून (1889) – संघ शाखा पर आतंकी हमला (मोगा)

सांस्कृतिक पर्व/त्योहार

ज्येष्ठ शु. 10 (16जून)– गंगा दशहरा (मेला हरिद्वार)
29 जून – अमरनाथ यात्रा प्रारंभ

डूंगरपुर में किसान प्रशिक्षण वर्ग

किसानों को ट्रैक्टर के बजाय गोवंश पर मिले अनुदान- गोपाल भाई

''ट्रैक्टर, मशीनरी, यूरिया, डीएपी पर अनुदान की भांति गोवंश पर अनुदान जारी करने की योजना बने, तो गोवंश का संरक्षण होगा। अभी जो कृषक भारतीय नस्ल के नंदी गोवंश का संरक्षण कर खेती में उपयोग कर रहे हैं, उन कृषकों के लिए अनुदान देने की योजनाएं बनाने की आवश्यकता है।'' यह कहना है भारत सरकार द्वारा कामधेनु पुरस्कार विजेता गोपाल भाई सुतारिया का। वे बीते दिनों वमासा (डूंगरपुर) स्थित श्री राधा कृष्ण गोशाला में आयोजित एक किसान सम्मेलन व प्रशिक्षण वर्ग में बोल रहे थे।

उन्होंने बताया कि 'गौकृपा अमृतम' (प्राकृतिक पंचगव्य और अन्य जड़ी-बूटियों की मदद से बनाया गया एक बेक्टीरियल कल्चर है जो जैविक खेती के लिए काफी कारगर सिद्ध हो रहा है) के उपयोग से 7 दिन के अंदर पेस्टिसाइट बंद हो सकता है भले ही आप 30 सालों से यह काम में ले रहे हों। इसके उपयोग से दो गुना व कुछ फसलों में तीन-तीन गुना उत्पाद हुआ है।

कृषि वैज्ञानिक श्री केलकर ने बताया कि कृषि वैज्ञानिक अल्बर्ट हावर्ड (1905-1931) को अंग्रेजों ने भारत में खेती सिखाने भेजा, उसने जब भारतीय किसानों की कृषि पद्धति देखी तो आश्चर्यचकित रह गया। उसने कहा भारतीय किसानों को खेती सिखाने की नहीं बल्कि खेती कैसे करें, यह उनसे सीखने की आवश्यकता है।

इस कार्यक्रम में 2 हजार से अधिक किसान भाईयों ने भाग लिया।

पंचांग- ज्येष्ठ (शुक्ल पक्ष) 7 जून से 22 जून, 2024 तक

विनायक चतुर्थी– 10 जून, **श्रुति पंचमी**– 11 जून (जैन), **श्री महेश नवमी**–15 जून, **गंगा दशहरा**– 16 जून, **निर्जला एकादशी व्रत**– 17 जून, **निर्जला एकादशी (वैष्णव)**–18 जून, **प्रदोष व्रत**– 19 जून, **पूर्णिमा व्रत**– 21 जून

ग्रह स्थिति **चन्द्रमा :** 7 जून को उच्च की राशि **वृष** में, 8-9 जून को **मिथुन** राशि में, 10-11 जून स्वराशि **कर्क** में, 12 से 14 जून को **सिंह** राशि में, 15-16 जून को **कन्या** राशि में, 17 से 19 जून को **तुला** राशि में, 20-21 जून को नीच की राशि **वृश्चिक** में तथा 22 जून को **धनु** राशि में गोचर करेंगे। ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष **गुरु** व **शनि** यथावत क्रमशः वृष व कुंभ राशि में स्थित रहेंगे। इसी प्रकार **राहु** व **केतु** भी क्रमशः मीन व कन्या राशि में स्थित रहेंगे। **मंगल** यथावत मेष राशि में स्थित रहेंगे। **सूर्य** 14 जून को रात्रि 12.27 बजे वृष से मिथुन में प्रवेश करेंगे। **बुध** 14 जून को रात्रि 1:05 बजे वृष से मिथुन राशि में प्रवेश करेंगे। **शुक्र** 12 जून को सायं 6:28 बजे वृष से मिथुन राशि में प्रवेश करेंगे।

संत कबीर

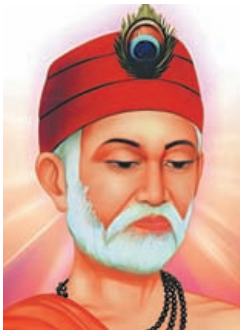

15वीं सदी के भारतीय संत कबीरदास का जन्म काशी में हुआ था। एक प्रसिद्ध संत, कवि होने के साथ-साथ वे समाज सुधारक भी थे। उनका पालन-पोषण एक मुस्लिम परिवार में हुआ था। स्वामी रामानंद के शिष्य व निर्गुण ब्रह्म के उपासक कबीर स्वभाव से कठोर और वाणी से अति मुखर थे। उन्होंने समाज में फैली कुरीतियों, कर्मकांड, अंध विश्वास की निंदा की और सामाजिक बुराइयों की कड़ी आलोचना करते हुए दूर करने का प्रयास किया।

कबीर ने जातिभेद और आडम्बरों का विरोध कर शुद्ध मानसिक उपासना का मार्ग दिखाया। श्री गुरुग्रंथ साहिब में शामिल भक्तों और संतों में संत कबीर के भी सबसे अधिक पद और 226 दोहे शामिल हैं। उनके शिष्य भागोदास व धर्मदास द्वारा 'कबीर बीजक' व 'कबीर वाणी' में उनकी साहित्य विरासत को संग्रहित कर संजोया गया है। उनकी मृत्यु के बाद, उनके अनुयायियों द्वारा कबीर पंथ नामक संप्रदाय की स्थापना की गई।

दिवस

अंतरराष्ट्रीय ओलम्पिक दिवस : वर्ष 1948 को पहला दिवस मनाया गया।

राष्ट्रीय सांख्यिकी दिवस : आर्थिक योजना व सांख्यिकी विकास के क्षेत्र में सांख्यिकीविद् पीसी महालनोबिस के जन्म दिवस की स्मृति में यह दिवस मनाते हैं।

मिट्टी में खेलने से इम्यून सिस्टम होता है मजबूत

यूनिवर्सिटी ऑफ ब्रिस्टल (अमरीका) व पलेर्मो यूनिवर्सिटी (इटली) द्वारा एक ताजा शोध में बताया गया है जो बच्चे बचपन में मिट्टी में नहीं खेलते या खुले वातावरण में नहीं रहते हैं, उन्हें कई बीमारियों का सामना करना पड़ता है।

रिसर्च के अनुसार मिट्टी में खेलने व खुले वातावरण में रहने से उनका मानसिक व शारीरिक विकास अच्छा होता है तथा आंत में गुड बैक्टीरिया का विकास जल्दी होता है। इससे बच्चों का पाचन अच्छा रहता है साथ ही इम्यून सिस्टम बूस्ट होने व हैप्पी हार्मोंस रिलीज होने से वे तनावमुक्त रहते हैं।

कुकिंग / किचन टिप्स

अगर नींबू का अचार खराब होने लगे तो उसमें थोड़ा सा सिरका डालकर हल्की सी आंच पर पका लें, इससे आचार खराब होने से बच जायेगा।

घरेलू नुस्खा

पेट में किसी भी प्रकार दर्द है तो अदरक का एक टुकड़ा लेकर कूट लें और उसमें थोड़ी सी काली मिर्च और एक चुटकी हींग पीसकर डालें। तीनों को अच्छे से मिलाकर खा लें। खाने के तुरंत बाद एक गिलास गुनगुना पानी पी लें।

गीता- दर्शन

यो न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न काङ्क्षति।
शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान्यः स मे प्रियः।।

कृष्ण कहते हैं, हे अर्जुन! जो न कभी हर्षित होता है, न द्वेष करता है, न शोक करता है, न कामना करता है तथा जो शुभ और अशुभ सम्पूर्ण कर्मों का त्यागी है- वह भक्तियुक्त पुरुष मुझको प्रिय है।। *(12/17)*

आओ संस्कृत सीखें-38

- यह मेरा दोष नहीं है। **एषः मम दोषः न।**
- ऐसे गम्भीर मत होइए। **एवं गम्भीरः मा भवतु।**

जांचें कि आप कितने ज्ञानवान है?

नीचे दिए गए 10 प्रश्नों के उत्तर बताइए। अपना ज्ञान स्तर निम्नानुसार मानें- **सामान्य**- यदि आप 5 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं। **श्रेष्ठ** - यदि 8 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं। **उत्तम**- यदि सभी उत्तर सही देते हैं।

1. विश्व की पहली वैदिक घड़ी का निर्माण कहाँ हुआ था?
2. भारत की पहली महिला चुनाव आयुक्त कौन थीं?
3. हीराकुंड बांध किस नदी पर स्थित है?
4. मोहनजोदड़ो को अन्य किस नाम से जाना जाता है?
5. अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव पहली बार किस देश में मनाया गया?
6. ट्रिपल तलाक पर कानूनी प्रतिबंध कब लगाया गया?
7. नव-निर्मित लता मंगेशकर चौक किस राज्य में स्थित है?
8. राष्ट्रीय सांख्यिकीय दिवस कब मनाया जाता है?
9. नेवटा और कानोता बांध राजस्थान के किस जिले में स्थित है?
10. हाल ही में भारतीय नौसेना ने किस जहाज को सेवामुक्त किया है?

1. उज्जैन (म.प्रदेश) 2. वीएस रमा देवी 3. महानदी (ओडिशा) 4. मुरदों का टीला 5. श्री लंका (कोलंबो) 6. 1 अगस्त, 2019 7. अयोध्या (उत्तर प्रदेश) 8. 29 जून 9. जयपुर 10. बीना

बोधकथा

परीक्षा

आश्रम में शिष्यों की शिक्षा का अंतिम दिवस था। आचार्य जी ने सभी शिष्यों को बांस की टोकरी दी और कहा ''पास की नदी से इसमें जल भर के लाओ और पौधों को सींचो।''

शिष्यों ने सोचा आचार्य जी यह कैसी परीक्षा ले रहे हैं। बांस की टोकरी में तो पानी आ ही नहीं सकता। फिर भी आचार्य जी की आज्ञा का पालन करने सभी लोग अपनी-अपनी टोकरी लेकर नदी पर गए और जल भरने लगे। जैसे ही वे टोकरी में जल भरकर ऊपर लाते, सारा जल टोकरी के छिद्रों से बह जाता।

कुछ शिष्यों ने एक दो बार में ही कहा, ''यह नहीं हो सकता'' और वापस आ गए।

इनमें से तीन शिष्य ऐसे थे जिन्हें गुरु की बात पर विश्वास था। तीनों बांस की टोकरी को बार-बार भरते रहे। लगभग घंटे भर बाद उन्होंने देखा कि बांस की टोकरी में पानी भरने पर वह नीचे नहीं गिर रहा है क्योंकि इतनी देर में टोकरी पानी से भीग गई थी और बांस फूलकर आपस में एक-दूसरे से चिपक गए थे जिससे छिद्र बंद हो गए थे। तीनों जल से भरी हुई बांस की टोकरी लेकर आश्रम आए और पौधों को सींचा। आचार्य जी ने परीक्षा परिणाम घोषित किया जिसमें तीनों शिष्य ही सफल हुए ।

आचार्य जी ने बताया कि, 'जीवन में विश्वास, अभ्यास और धैर्य होना बहुत आवश्यक है। इन तीनों को मेरे कथन पर विश्वास था। इन्होंने अभ्यास नहीं छोड़ा और अंत तक धैर्य रखकर प्रतीक्षा की और तीनों सफल हुए।

वर्ग पहेली

नीचे हिंदू देवी-देवताओं के 12 वाहनों (सवारी) के नाम दिए हुए हैं उन्हें खोजिए

मू	ष	क	बा	त	ग
प	तं	ग	हा	द	रू
स	हं	स	थी	दी	ड़
मो	स	उ	ल्लू	नं	व
र	स	कि	ली	चू	श
जा	धा	शे	छ	ल	अ
म	ग	र	म	च	छ

उत्तर : मूषक, शेर, गरुड़, हाथी, हंस, मोर, नंदी, अश्व, उल्लू, गधा, मछली, मगरमच्छ

बाल प्रश्नोत्तरी - 56

जीतें पुरस्कार अब दूसरी और तीसरी बार भी

बाल मित्रों, 16 अप्रैल का अंक पढ़ने के पश्चात् निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें। अपने उत्तर 'उत्तर शीट' में भरकर 7976582011 पर वॉट्सएप करें। प्रथम 10 को प्रमाण-पत्र तथा प्रथम 5 को पुरस्कृत किया जाएगा। प्रतियोगिता में 6 से 17 वर्ष तक के बाल-किशोर ही भाग ले सकते हैं। लगातार 5 बार उत्तर सही पाए जाने पर विशेष पुरस्कार दिया जाएगा। उत्तर भेजने की अंतिम तिथि - **20 जून, 2024**

1. राष्ट्रपति भवन स्थित मुगल गार्डन का नया नाम क्या रखा गया है?
   (क) विकसित उद्यान (ख) अमृत उद्यान (ग) विजय उद्यान (घ) संकल्प उद्यान
2. न्यायपूर्ण शासन का प्रतीक 'सेंगोल' की स्थापना कहां की गई है?
   (क) नई संसद (ख) पुरानी संसद (ग) उच्चतम न्यायालय (घ) राष्ट्रपति भवन
3. प्राचीन महाकाली मंदिर,पावागढ़ किस राज्य में स्थित है?
   (क) गुजरात (ख) महाराष्ट्र (ग) राजस्थान (घ) मध्यप्रदेश
4. सप्तकोटेश्वर मंदिर किस राज्य में स्थित है?
   (क) उत्तर प्रदेश (ख) आंध्र प्रदेश (ग) महाराष्ट्र (घ) हैदराबाद
5. वर्ष 2023 में कितने करोड़ पर्यटक कश्मीर पहुँचे हैं?
   (क) 1 करोड़ (ख) 2 करोड़ (ग) 3 करोड़ (घ) 50 लाख
6. राष्ट्र मंडल खेल घोटाला (कॉमनवेल्थ गेम्स, दिल्ली) किस वर्ष में हुआ था?
   (क) 2010 (ख) 2012 (ग) 2011 (घ) 2009
7. कर्नाटक के प्रसिद्ध संत बसवेश्वर ने किस मंडप की स्थापना की थी?
   (क) अनुभव मंडप (ख) अनुक्रम मंडप (ग) अक्षय मंडप (घ) अभय मंडप
8. दो दिवसीय मेवाड़ टॉक फेस्ट का आयोजन कहां हुआ था?
   (क) उदयपुर (ख) सीकर (ग) जयपुर (घ) जोधपुर
9. तीन गोल्ड मेडल जीतने वाली 92 वर्षीय पाना देवी राजस्थान के किस जिले से हैं?
   (क) बाड़मेर (ख) बीकानेर (ग) बारां (घ) बूंदी
10. वृहत्तर राजस्थान संघ (वर्ष 1949 में) किस दिन बना था?
   (क) 10 मार्च (ख) 30 अप्रैल (ग) 20 मार्च (घ) 30 मार्च

बिंदुओं को मिलाओ और चित्र में रंग भरो

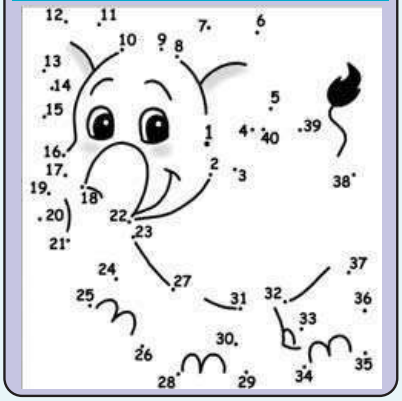

बाल प्रश्नोत्तरी-54 के परिणाम

1. श्रेष्ठ बंसल, खेरली, अलवर
2. मानस मिश्रा, सैंथल मोड़, दौसा
3. उत्सव कोठारी, बनेड़ा, शाहपुरा, भीलवाड़ा
4. राजनंदिनी, शास्त्री नगर, बाड़मेर
5. सुहाना कुमावत, एकलिंग विहार कालोनी, उदयपुर
6. शारदा विश्नोई, गणपत नगर, बाड़मेर
7. पीयूष कुमार, नीमराना, कोटपूतली, जयपुर
8. करण आचार्य, रामबाजार केकड़ी, टोंक
9. कृष्ण प्रताप सिंह, चौथ का बरवाड़ा , सवाईमाधोपुर
10. उत्कर्ष शर्मा, विज्ञान नगर, कोटा

सही उत्तर
1. (क)
2. (ग)
3. (घ)
4. (क)
5. (ख)
6. (ख)
7. (क)
8. (ग)
9. (ख)
10.(क)

निम्नांकित उत्तर शीट भरकर इसी की फोटो वॉट्सएप करें। (बाल प्रश्नोत्तरी - 56)
(अपनी पासपोर्ट फोटो अवश्य वॉट्सएप करें)

1.( ) 2.( )3.( )4.( ) 5.( )6. ( )7.( )8.( ) 9.( )10.( )

नाम.......................................कक्षा.........पिता का नाम..

उम्र............ पूर्ण पता..

......................पिन..................मोबाइल..

बलवंतराज राजपुरोहित
+91 9995684317
+91 9048915555

SKJ
श्री Kamdhenu
JEWELLERS

शाखा : टी नगर - चेन्नई | RT स्ट्रीट - बेंगलोर | त्रिशुर - केरला

चंद्रिका ज्वेलर्स | पेलेस रोड - राजकोट

मैन्युफैक्चर 91.6 गोल्ड ज्वेलरी

बलवंतराज राजपुरोहित गांव - अणखोल तहसील -चितलवाना जिला - सांचौर राजस्थान

स्वराज्य संस्थापक

छत्रपति शिवाजी 13

आलेख एवं चित्र

ब्रजराज राजावत

'स्वराज्य' का शुभारंभ हुआ सन् 1645 में... सह्याद्री की खड़ी पहाड़ी पर बने 'तोरण दुर्ग' पर सूर्योदय से पूर्व ही शिवाजी और उनकी मावले युवाओं की सेना ने धावा बोल दिया। इस सुनियोजित आक्रमण को आदिलशाही सैनिक सह नहीं पायें।... तोरण दुर्ग पर शिवाजी का अधिकार हो गया।

350 वर्ष बाद स्वतंत्रता का सूर्योदय हुआ... शिवाजी के सैनिकों में असीम उत्साह और बीजापुर के सुल्तान को काटो तो खून नहीं!

कार्य शुरू होते ही प्राचीर में दबे स्वर्ण के भण्डार मिल गये

आरम्भ में ही बड़ी सफलता और स्वर्ण भण्डार मिल जाने से आगे की सुहृद योजनाएं बनने लगीं....

शुभ मुहूर्त में निर्माण कार्य शुरू हुआ... किले का नाम रखा गया रायगढ़।

क्रमशः

पाक्षिक
पाथेय कण
(01-15 जून,2024)
(26 मई को प्रकाशित, पृष्ठ 20)

आर.एन.आई पंजीयन क्र. 48760/87
डाक पंजीयन संख्या JAIPUR CITY 202/2024-26

अग्रिम शुल्क बिना प्रेषण की अनुमति लाइसेंस संख्या
JAIPUR CITY/WPP 01/2024-26

1st Rank IAS 2023
पूरे भारत में हिन्दी माध्यम

Springboard ACADEMY
AN INSTITUTE FOR IAS & RAS

Star achievers who realised their dreams of civil services with us

IAS 2023 में चयनित
स्प्रिंगबोर्ड के सभी अभ्यर्थियों को
हार्दिक शुभकामनाएं

IAS MENTORSHIP PROGRAM - 2023

रैंक 53

मोहन लाल
हिन्दी माध्यम
1st Rank

रैंक 551

मोहन लाल मंगावा
हिन्दी माध्यम

रैंक 555

ईश्वर लाल गुर्जर
हिन्दी माध्यम

रैंक 755

दीपक चौधरी
अंग्रेजी माध्यम

रैंक 854

सचिन गुर्जर
हिन्दी माध्यम

हिन्दी माध्यम से IAS परीक्षा 2023 का सर्वश्रेष्ठ परिणाम

Riddhi - Siddhi, Gopalpura Bypass, Jaipur
9636977490, 0141-3555948
स्प्रिंगबोर्ड एकेडमी के IAS, RAS हेतु प्रमाणित क्लास नोट्स उपलब्ध
The Notes Hub 7610010054, 7300134518

ऐप डाउनलोड करने के लिए
QR Code स्कैन करें
GET IT ON Google Play

Connect with us-
Springboard Academy Online
Springboard Academy Jaipur

स्वत्वाधिकारी पाथेय कण संस्थान के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक माणकचन्द
द्वारा कुमार एण्ड कम्पनी, ए-10, 22 गोदाम औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर से मुद्रित
प्रकाशकीय कार्यालय : पाथेय भवन, 4 मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, मालवीय नगर, जयपुर-302017
सम्पादक- रामस्वरूप अग्रवाल
प्रेषण दिनांक 1,2,3,4 व 5 जून, 2024 आर.एम.एस.(पी.एस.ओ.) जयपुर

प्रतिष्ठा में,